पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में हम भावनात्मक देह की बात कर रहे थे, जिसमें हमने इस बात पर ज़ोर दिया कि भावनात्मक मन के आधार से बच्चे के अंदर तीन तरह के डर होते हैं। उन डरों के आधार से आंतरिक शिशु में होने वाले परिवर्तन को देखा जा सकता है। इसलिए कभी हम बच्चों की हरकतों को देखकर भी इन भयों के आधार से उनको ठीक कर सकते हैं। अब हम अपने बौद्धिक देह की चर्चा करेंगे...

बौद्धिक देह भी एक तरह की एक ऐसी दीवार है जिसमें तर्क और अनुभूतियाँ होती हैं। ऐसे देह को हम भावना विहीन भी कह सकते हैं। ऐसे देह के अंदर सिर्फ तर्क और तर्क होता है। ऐसे लोग हमेशा अपने ईगो के कारण कहते हैं कि सबकुछ मैं करता हूँ, सबकुछ मेरे द्वारा ही होता है, मैं ना रहूँ तो कुछ भी ना हो। इतनी सारी मान्यतायें जो आज समाज के अंदर बनी हैं उसका मूल इस बौद्धिक देह की ही रचना है। अर्थात् बौद्धिक देह हर समय अपने आपको सही साबित करने के अलावा कुछ भी नहीं सोचता। उदाहरण के लिए, जैसे मैं सबकुछ कर लेता हूँ, मैं सीख लेता हूँ, मैं ना रहूँ तो कुछ भी ना हो, मुझे किसी पर विश्वास नहीं करना है, मुझे सबकुछ खुद करना है, मैं जबतक खाना खुद ना बनाऊँ तब तक मुझे तसल्ली नहीं होती आदि आदि। इस देह की दीवार उन बच्चों के अंदर ज़्यादा होती है जो सुरक्षा, प्यार और स्वतंत्रता के अभाव में जिये होते हैं। उनको कभी किसी ने सुरक्षा नहीं दी, प्यार नहीं दिया, स्वतंत्रता नहीं दी कुछ भी करने की। इसलिए आगे चलकर उनका भाव स्वभाव ऐसा ही हो जाता है कि यदि मैं अपने आपको बुद्धिमान बना लूँ तो सबकुछ ठीक हो सकता है। इसका सबसे अच्छा उदहारण वैज्ञानिक और शास्त्रज्ञ होते

हैं। अगर इनके जीवन को देखा जाए तो दोनों ही अडिग होते हैं, दोनों गलत भी हो सकते हैं। इनको ये लगता है कि अगर मैं ऐसी मान्यता बना लूँ कि मैं ऐसा हूँ, मैं ये सोचता हूँ, मैं ये बोलता हूँ, मुझे ये सबकुछ करना है तो उससे सुरक्षा मिलेगी। नहीं तो जीने में खतरा है। वे अपने आप से बार-बार कहते हैं कि अगर दुनिया में रहना है तो हमें ऐसा बनना पड़ता है। ये दुनिया बहुत खतरनाक है, मुझे किसी पर भी भरोसा नहीं होता, इसलिए मुझे अपने आप ही सबकुछ करने दो। उलझे हुए से रहते हैं ऐसे व्यक्ति, और उनको सच में सहयोग नहीं मिलता। वैज्ञानिक या मनोवैज्ञानिक या फिर कोई नेता या अभिनेता, सभी के अंदर बौद्धिक देह के विकास की बहुत प्रधानता है। यदि बहुत सरल शब्दों में कहा जाए तो कह सकते हैं कि जो आसानी से सबके बीच में ना घुले मिले, सबको अपने से अलग महसूस करे, अपने व्यक्तित्व को श्रेष्ठ कहे, ऐसे लोग ही इस कड़ी के साथ गहराई से जुड़े होते हैं। परंतु विडम्बना यह है कि कोई भी इस बात को नहीं समझता कि इससे मैं सबके दिलों से दूर हो रहा हूँ और भविष्य में किसी भी सम्बन्ध के साथ मुझे भरोसा नहीं होगा। इन मान्यताओं को तोड़ना बहुत ज़रूरी है। चौथा देह भौतिक देह है ही है, जिसके बारे में आप सब जानते हैं कि ये पाँच तत्वों का बना हुआ है। उसको भी ब्रेक करना पड़ता है। कहने का मतलब है कि आत्मा के अंदर या मन के अंदर चार तरह की दीवारें हैं, पहला, प्रकाशमय देह, दूसरा भावनात्मक देह, तीसरा बौद्धिक देह, और चौथा भौतिक देह। इन चारों को सूक्ष्म रूप से तोड़ना बहुत ज़रूरी है। नहीं तो कोई न कोई दीवार आकर हमारे मन को व्यथित कर देती है। हर समय स्थिति और परिस्थिति में हमें अपने आपको सम्भालने के लिए इस देह के साथ इन तीन तरह के देहों को भी पूर्ण रूप से तोड़कर, सारे डरों को समाप्त कर, उस परम पिता परमात्मा से गहराई से जुड़ सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-1(2017-2018)

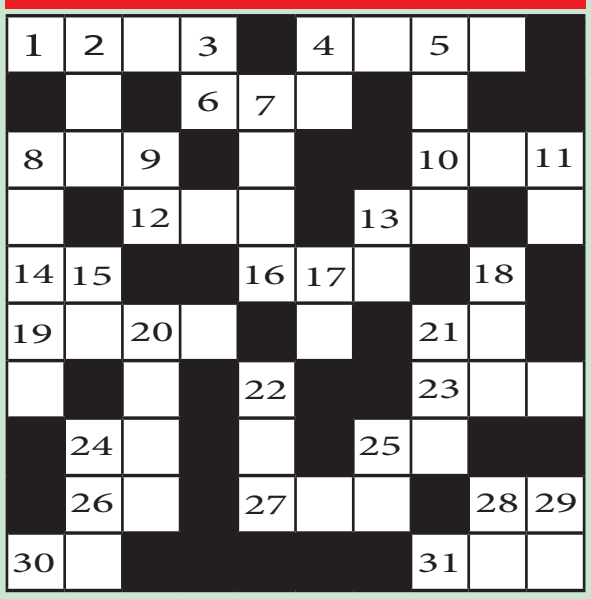

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. समाचार, सूचना (3)
3. धूल, कण, गर्द, पराग (2)
4. सिर, खोपड़ी (2)
5. नौकर-चाकर, सेवक-सेविका (2-2)
7. अधिकारी, वारिस (4)
8. पालना, पालन-पोषण (5)
9. नाराज़, नाखुश (2)
11. इन्द्र का अस्त्र, अति मज़बूत (2)
13. खज़ाना, कीमती वस्तु (2)
15. नवीन, नव (2)
17. नयनहीन, अंधा (2)
18. जागृत, सजग (3)
20. सृष्टि का पहला युग (4)
21. महाविनाश, विनाशलीला (3)
22. ऐश्वर्य, धन-दौलत (3)
24. नमस्कार, प्रणाम, अदब-कायदा (3)
25. कामना, इच्छा (2)
28. राज्य, रहस्य (2)
29. मृत्यु को प्राप्त हुआ (2)

बायें से दायें

1. समाचार पत्र, ... से सबको पता पड़ेगा (4)
4. जाति, समूह, वर्ण विशेष (4)
6. विष, माहुर (3)
8. पहचान, सत्य और झूठ की....होनी चाहिए (3)
10. दैत्य, असुर, राक्षस (3)
12. लाभ, बाप को याद करने में ही....है (3)
13. मौसी, यह कोई....का घर नहीं है (2)
14. जंगल, उपवन, बाग (2)
16. कायदा, नियम (3)
19. जायदाद, राज्य, अमीरी (4)
21. सेवक, धारणा नहीं करेंगे तो....में आयेंगे (2)
23. लगी....बस एक यही, लव (3)
24. उम्र, योग से....लम्बी होती जाती है (2)
25. कहवा, एक पेय पदार्थ (2)
26. धब्बा, उल्टे कर्म करके अपने कैरेक्टर में.... नहीं लगाना है (2)
27. कारण, हेतु (3)
28. त्रेतायुग का महाराजा (2)
30. सम्पूर्ण, सारा (2)
31. वंशावली (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

दिल्ली-मजलिस पार्क। निगम पार्षद नवीन त्यागी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

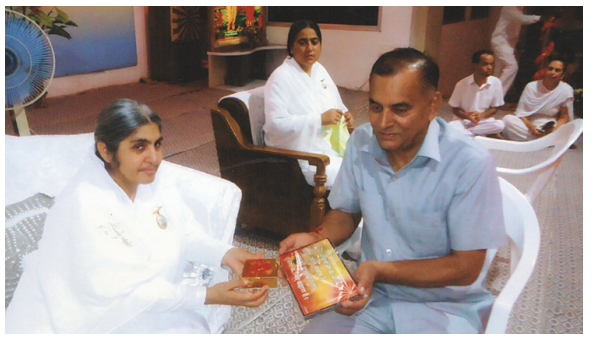

कुरूक्षेत्र-हरियाणा। जेल के डी.एस.पी. सुभाष सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरोज।

फिरोजाबाद-उ.प्र.। डी.एम. नेहा शर्मा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् बलेसिंग कार्ड देते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.सरिता।

गोलक गंज-असम। विधायक अश्विनी राय सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संध्यालिका।

नरवाना-कन्नौज(उ.प्र.)। ग्राम विकास अधिकारी बहन नेहा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विद्या, ब्र.कु. लता तथा अन्य।

फिरोजपुर कैन्ट-पंजाब। हेड क्वाटर एस.पी. सरदार राजकुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शक्ति। साथ हैं ब्र.कु.उषा।